भारतीय दूत ने प्रभावी बहुपक्षवाद पर यूएन चार्टर के सिद्धांतों पर उठाए सवाल, स्थायी सदस्यता पर दिया जोर

न्यूयॉर्क।
संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में आयोजित संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों की रक्षा के माध्यम से प्रभावी बहुपक्षवाद पर खुली बहस में संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि राजदूत रुचिरा कांबोज ने हिस्सा लिया। रुचिरा कंबोज ने पूछा कि क्या प्रभावी बहुपक्षवाद को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों की रक्षा का बचाव करके अमल में लाया जा सकता है, जो पांच देशों को दूसरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली बनाता है और उन पांचों में से प्रत्येक को शेष 188 सदस्य देशों की सामूहिक इच्छा को अनदेखा करने की शक्ति प्रदान करता है।

राजदूत कंबोज ने कहा, भले ही हम इस मुद्दे पर बहस कर रहे हैं और चाहते हैं कि प्रभावी बहुपक्षवाद कायम रहे, लेकिन हम सामूहिक रूप से बहुपक्षीय व्यवस्था की कमियों से अवगत हैं जो समकालीन चुनौतियों का जवाब देने में विफल रही है, चाहे वह कोविड महामारी हो या यूक्रेन में चल रहा संघर्ष। कंबोज ने कहा, इसके अलावा, आतंकवाद, कट्टरवाद, जलवायु न्याय और जलवायु कार्रवाई, विघटनकारी गैर-देश संगठन, ऋण और कई भू-राजनीतिक प्रतियोगिताओं जैसी महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियां वैश्विक शांति और सुरक्षा को कमजोर करना जारी रखे हुए है। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या 21वीं सदी में एक निकाय के माध्यम से बहुपक्षवाद को प्रभावी ढंग से अमल में लाया जा सकता है जो लूट का माल विजेता का है के सिद्धांत का जश्न मनाता है।

बहस के दौरान तीसरा सवाल उठाते हुए कंबोज ने पूछा, क्या हम वास्तव में संयुक्त राष्ट्र चार्टर का बचाव करके प्रभावी बहुपक्षवाद को बढ़ावा दे सकते हैं, जहां दो स्थायी सदस्य अपने नाम भी बदलवाने में सक्षम नहीं हो पाए हैं चार्टर का अनुच्छेद 109 कभी नहीं चाहता है कि इसे हमेशा के लिए पत्थर की लकीर बना दिया जाए, और इसीलिए इसने 10वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा से पहले चार्टर की एक सामान्य समीक्षा सम्मेलन आयोजित करने की सिफारिश की थी। 77 साल बाद, हम इसे हकीकत बनाने के करीब भी नहीं हैं। उन्होंने कहा कि यूएनएससी को अपनी प्रभावशीलता और विश्वसनीयता के लिए अधिक विकासशील देशों के बीच इस कोर संस्थान के अपने प्रतिनिधित्व को विस्तृत करना होगा। उन्होंने आगे कहा, अगर हम 1945 की पुरातनपंथी मानसिकता को बनाए रखना जारी रखते हैं, तो हम अपने लोगों का संयुक्त राष्ट्र में विश्वास खोते रहेंगे। उन्होंने कहा, भारत 26 जून, 1945 को सैन फ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्र चार्टर का संस्थापक हस्ताक्षरकर्ता है। उन्होंने यूएनएससी में भारत की स्थायी सदस्यता के बारे में दृढ़ता से कहा कि 77 साल बाद जब हम देखते हैं कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के साथ-साथ अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के पूरे महाद्वीपों को वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा जा रहा है, तो हम सही तरीके से इसमें प्रमुख सुधार की मांग करते हैं।

न्यूज ब्रीफ

कबाल शहर में पुलिस थाने पर बड़ा आत्मघाती हमला, 12 पुलिसकर्मियों की मौत, 40 से ज्यादा घायल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के स्वात जिले के कबाल शहर में आतंकवाद रोधी विभाग (सीटीडी) के एक पुलिस थाने पर संदिग्ध आत्मघाती हमले में 12 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई और 40 से अधिक घायल हो गए। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के पुलिस महानिरीक्षक अख्तर हयात खान ने कहा कि सुरक्षा अधिकारी पूरे प्रांत में हाई अलर्ट पर हैं। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि पुलिस थाना परिसर में आतंकवाद निरोधी विभाग और एक मस्जिद भी है। इससे पहले, जिला पुलिस अधिकारी (डीपीओ) शफी उल्लाह ने कहा कि सीटीडी पुलिस स्टेशन के अंदर दो विस्फोट हुए, जिससे इमारत नष्ट हो गई। पुलिस ने कहा कि कई लोग मलबे में दब गए हैं, जबकि घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सरकार ने आसपास के सभी अस्पतालों में आपात स्थिति घोषित की है। सीटीडी के डीआईजी खालिद सोहेल ने भी कहा कि इमारत ढह गई और कई लोग मलबे में दब गए। इमारत धराशायी होने के कारण बिजली भी गुल हो गई। पाकिस्तान के गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह ने विस्फोट की निंदा की और लोगों की मौत पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा, आतंकवाद के इस अभिशाप को जल्द ही उखाड़ फेंका जाएगा। खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के कार्यवाहक मुख्यमंत्री मोहम्मद आजम खान ने भी सुरक्ष बलों को निशाना बनाकर किए गए आत्मघाती हमले की कड़ी निंदा की।

पाकिस्तान नहीं चीन को सबसे बड़ी सैन्य चुनौती मानते हैं भारतीय, अमेरिकी सांसद ने बताई वजह

वॉशिंगटन। अमेरिका के भारतीय मूल के सांसद रो खन्ना ने कहा है कि भारतीय अब पाकिस्तान को नहीं बल्कि चीन को सबसे बड़ी सैन्य चुनौती मानते हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका को चीन के साथ अपने रिश्तों को फिर से संतुलित करने की जरूरत है। बता दें कि मई 2020 से पूर्वी लद्दाख में भारत और चीन के सैनिकों के बीच हुई भिड़ंत के बाद से दोनों देशों के रिश्तों में तनाव बना हुआ है। भारत और चीन 17 राउंड की शीर्ष कमांडर स्तर की बातचीत कर चुके हैं लेकिन अभी भी दोनों देशों में तनाव बना हुआ है। भारत साफ कर चुका है कि जब तक सीमा पर शांति नहीं होगी, तब तक दोनों देशों के संबंध सामान्य नहीं हो सकेंगे। प्रतिष्ठित स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के हूवर इंस्टीट्यूट में विदेश नीति पर दिए अपने संबोधन में रो खन्ना ने कहा कि आज हमें चीन के साथ अपने रिश्तों को फिर से संतुलित करने की जरूरत है। इससे हमें और एशिया में हमारे सहयोगियों को मिल रही चुनौती को लेकर स्पष्टता आएगी। हम उम्मीद करते हैं कि हमारी कूटनीति और नेतृत्व की बदौलत 21वीं सदी, 20वीं सदी की तुलना में कम हिंसाग्रस्त होगी। रो खन्ना ने कहा कि चीन एशिया में आधिपत्य जमा रहा है और सीमा विवाद को लेकर भारत को धमका रहा है तो अन्य देशों के साथ भी जूनियर सहयोगियों जैसा व्यवहार कर रहा है। खन्ना ने कहा कि अमेरिका को भारत और अन्य एशियाई सहयोगी देशों के साथ संबंध मजबूत करने की जरूरत है। साल 2017 में अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत ने मिलकर क्वाड का गठन किया, जिसका उद्देश्य भारत प्रशांत क्षेत्र में अहम समुद्री रास्ते की सुरक्षा सुनिश्चित करना है ताकि यह रास्ता किसी भी देश के प्रभाव से मुक्त रहे।

छह साल की हिंदू बच्ची का यौन शोषण, एफआईआर दर्ज

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में हिंदुओं समेत अल्पसंख्यकों पर अत्याचार, जबरन धर्मांतरण और उनकी हत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। हाल ही में शेख भिरकियो के सिंध गांव और टांडो अल्लाहयार जिले में हिंदू अल्पसंख्यक को निशाना बनाने वाली कई घटनाएं सामने आई हैं। यहां के भरकिया गांव में एक छह साल की हिंदू लड़की का अपहरण और यौन शोषण किया गया। घटना को अंजाम 23 साल के लड़के ने दिया। युवक ने सिंध प्रांत के टांडो अल्लायार जिले के शेख भीरकियों गांव में घर के बाहर खेल रही बच्ची का अपहरण किया गया। बाद में घर से करीब छह किलोमीटर दूर पर बेहोशी की हालत में पड़ी मिली। घायल अवस्था में उसे स्थानीय अस्पताल ले जाया गया।। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। शेख भिरकियो और टांडो अल्लायार जिले के गांवों में अति-कट्टरपंथी मुसलमानों रहते है। जिसकी वजह से हिंदू अल्पसंख्यक को लक्षित सांप्रदायिक हिंसा की कई घटनाएं सामने आती रही है। फरवरी में, मुस्लिम ठगों ने नीलो कोल्ही नामक एक हिंदू के घर पर डंडों और बंदूकों से हमला किया। रिवार पर गोलीबारी की और नीलो कोल्ही की बेटी सुधी घायल हो गई।

कोविड-19 की सच्चाई छिपा रहा चीन

पहली जांच रिपोर्ट ही गायब कर दी, इंटरनेशनल टीम को इन्वेस्टिगेशन नहीं करने दिया

वॉशिंगटन।
साल 2020 के शुरुआती दिनों की बात है। दुनिया में एक नई बीमारी तेजी से फैल रही थी। इसे कोविड-19 नाम दिया गया। अमेरिका और चीन के साइंटिस्ट्स ने इससे जुड़ा कुछ अहम डेटा जारी किया। इसमें बताया गया था कि यह वायरस कितनी तेजी से फैल रहा है और लोग मारे जा रहे हैं।

तमाम तरह की हेल्थ वॉर्निंग्स और अलर्ट जारी किए किए। मकसद था कि इस वायरस से निपटने के लिए तमाम देश मिलकर काम करें। बहरहाल, चंद दिनों में ही यह रिसर्च पेपर और डेटा गायब हो गया। कहा गया कि रिसर्च रिपोर्ट सही नहीं थी। सच्चाई ये है कि चीन ने इसे हटाया। इसके साथ ही डेटा जारी करने वाले वैज्ञानिकों को भी टॉर्चर किया गया। तब तक कोविड-19 महामारी बन चुका था।

चीन सरकार का दबाव - अब यह साफ हो चुका है कि रिसर्च में कोई खामी नहीं थी, बल्कि हकीकत यह थी कि चीन सरकार सच्चाई छिपाना चाहती थी। यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा की प्रोफेसर इरा लोन्गिनी ने कहा- चीन से कोई भी जानकारी जुटाना बेहद मुश्किल है। मैंने भी उस रिसर्च में हिस्सा लिया था। कई बातों को छिपाया गया और कुछ को तो सिरे से गायब ही कर दिया गया।

चीन ने अपने साइंसदानों को परेशान किया, इंटरनेशनल लेवल की कोई इन्वेस्टिगेशन नहीं होने दी और ऑनलाइन डिस्कशन भी बैन कर दिया। इन बातों के तमाम सबूत मौजूद हैं। सेंसरशिप का यह आलम रहा कि इंटरनेशनल जर्नल्स और साइंटिफिक डेटा तक सामने नहीं आ सका। सरकार के दबाव में चीनी वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन डेटा ही हटा दिया। इसके अलावा जेनेटिक सीक्वेंसिंग और पब्लिक डेटाबेस जैसे सबूत भी सामने नहीं आ सके। कुछ डॉक्यूमेंट्स जरूर हासिल कर लिए और इनका एनालिसिस भी किया।

तमाम सबूत नहीं मिटा सका चीन - कुछ ग्रुप्स के पास फरवरी 2020 में जारी रिसर्च पेपर की जानकारी मौजूद है। हालांकि, इसमें भारी कांटछांट कर दी गई है। इस डेटा और रिसर्च पेपर की जरूरत इसलिए है, क्योंकि फ्यूचर के लिहाज से वैज्ञानिकों को इसकी सख्त जरूरत है। चीन अब भी लगातार कोशिश कर रहा है कि वायरस कहां से और कैसे फैला, इसकी सच्चाई को छिपाया जाए। उसकी हरकतों की सच्चाई भी सामने आ रही है। जनवरी 2020 में चीन के वुहान मार्केट से वायरस के फैलने के बाद सीक्वेंसिंग डेटा जुटाया गया था। हालांकि, चीन के वैज्ञानिकों द्वारा जुटाया गया यह डेटा तीन साल तक दुनिया के बाकी साइंटिस्ट्स के साथ शेयर नहीं किया गया। एक अमेरिकी रिसर्चर ने कहा- इस हरकत के लिए कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता। अब ये साफ होता जा रहा है कि गैरकानूनी मवेशी बाजार से यह वायरस मनुष्यों में फैला। जब वॉशिंगटन में मौजूद चीन की ऐंबैसी से इस बारे में पूछा तो वहां से कोई जवाब नहीं मिला। हैरानी की बात यह है कि इसी महीने चीन की हेल्थ मिनिस्ट्री ने कोविड-19 मामले पर होने वाली आलोचना को गलत बताते हुए धमकी दी थी कि इस तरह की हरकतों को सहन नहीं किया जाएगा।

सच छिपाने की असली वजह क्या - इसकी कोई एक वजह बताना मुश्किल है। वैसे भी चीन में सेंसरशिप किसी से छिपी नहीं है। महामारी के दौर में भी यही हुआ। वहां भी सवाल उठता रहा है कि क्या वायरस को कंट्रोल करने में जरूरत के मुताबिक, तेजी दिखाई या नहीं। कोई सबूत यह नहीं बताता कि वायरस के ओरिजन को छिपाने के लिए ही सारी कवायद की गई। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि कोविड-19 भी दूसरे वायरस की तरह जानवरों से इंसानों में फैला। एक दावा तो वेस्टर्न वर्ल्ड करता रहा है कि वायरल चीन के किसी लैब से फैला। दोनों ही पक्ष इस बारे में कुछ डेटा भी दिखाते हैं। बहरहाल, इन दावों के बीच दोनों पक्ष एक बात पर सहमत हैं कि चीन सरकार ने एक साइंस के मुद्दे पर भी सच छिपाने की साजिश रची। इस बारे में सिडनी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एडवर्ड होम्स ने कहा- अफसोस की बात है कि साइंस के मामले में भी पॉलिटिकल एजेंडा थोपा जा रहा है। होम्स उन साइंटिस्ट्स में शामिल थे, जिन्होंने वायरस फैलने पर शुरुआती रिसर्च किया था। दो साल पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अमेरिकी खुफिया एजेंसियों से कोरोना के ओरिजन पर बारीकी से जांच करने के लिए कहा था। रिपोर्ट 90 दिन में मांगी थी। बाइडेन ने जांच एजेंसियों को चीन की वुहान लैब से वायरस निकलने की आशंका को लेकर भी जांच करने को कहा था।

क्या बाइडन 2024 में फिर लड़ेंगे अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव, खुद कही ये बड़ी बात

वाशिंगटन।
अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन से जब भी दूसरे कार्यकाल के लिए चुनाव लड़ने के बारे में पूछा जाता है तो वह घुमा फिराकर जवाब दे देते थे। वहीं उनसे जुड़े लोग भी कुछ साफ कहने से बच रहे थे। हालांकि मीडिया रिपोर्ट में लगातार उनके चुनाव लड़ने की बात कही जाती रही है। आखिरकार अब बाइडन ने खुद बताया है कि उन्होंने दूसरे कार्यकाल के लिए चुनाव लड़ने का फैसला लिया है।

पत्रकार को दिया जवाब - असल में, राष्ट्रपति जो बाइडन रोज गार्डन से गुजर रहे थे, उस वक्त उनसे एक पत्रकार ने पूछा कि सर क्या आप फिर से चुनाव लड़ने वाले हैं इस पर बाइडन ने हंसते हुए जवाब दिया 'हां'। गौरतलब है, आज उनके औपचारिक रूप से अपने फैसले की घोषणा करने की उम्मीद है।

पर्दे के पीछे चुनाव की तैयारी शुरू - जो बाइडन काफी लंबे समय से कह रहे थे कि वो फिर से चुनाव लड़ने का इरादा रखते हैं, लेकिन औपचारिक घोषणा न होने से उनके समर्थक अनिश्चिता में थे। लोगों को लग रहा है था कि क्या 80 साल के बाइडन फिर से राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए तैयार होंगे। हालांकि पर्दे के पीछे की कहानी कुछ और बयां कर रही थी।

बाइडन के सहयोगियों ने साल 2024 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से जुड़े अभियान के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और चंदे के लिए कदम उठाना शुरू कर दिया है।

अमेरिकी इतिहास में सबसे उम्रदराज राष्ट्रपति - जो बाइडेन 80 साल के हैं। वे अमेरिका के इतिहास में सबसे उम्रदराज राष्ट्रपति हैं। डॉक्टरों ने बाइडेन के फरवरी में सेहत से जुड़े टेस्ट किए थे। इसके बाद घोषणा की थी कि वो ड्यूटी के लिए फिट हैं। वो हफ्ते में पांच बार व्यायाम करते हैं। व्हाइट हाउस का कहना है कि उनके रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह अपने काम के लिए मानसिक तौर से काफी तेज हैं। हालांकि, इसके बावजूद उनके फिर से चुनावों में उतरना एक ऐतिहासिक कदम है।

15 अप्रैल को दिया था संकेत - गौरतलब है, उन्होंने 15 अप्रैल को आयरलैंड में एक रैली में कहा था कि वो चुनाव की तैयारियां कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, बाइडन चुनाव लड़ने का ऑफिशियल अनाउंसमेंट कर सकते हैं। वो एक वीडियो के जरिए इसकी घोषणा करेंगे।

राष्ट्रपति जिनपिंग बोले- दुनिया के देशों के साथ संबंध मजबूत करना चाहता है चीन, राजदूतों की भूमिका अहम

बीजिंग।
चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 70 देशों के राजदूतों से उनके क्रेडेंशियल लिए, जिन देशों के राजदूतों से क्रेडेंशियल लिए गए, उनमें भारत के राजदूत प्रदीप कुमार रावत और अमेरिका के राजदूत रॉबर्ट निकोलस बर्न्स भी शामिल थे। बता दें कि चीन के साथ पूर्वी लद्दाख में जारी तनाव के बाद ही रावत की चीन में बतौर भारतीय राजदूत नियुक्ति की गई थी।

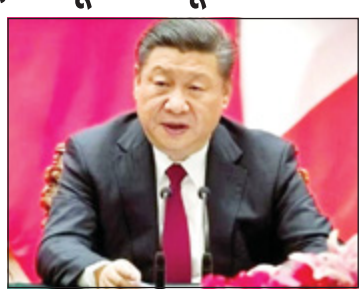

क्या बोले शी जिनपिंग

राजदूतों से मुलाकात कार्यक्रम में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने संबोधन में कहा कि चीन दुनिया के देशों के साथ अपने संबंध मजबूत करने के लिए तैयार है और यह संबंध समानता और आपसी फायदे पर आधारित होंगे। जिनपिंग ने कार्यक्रम में मौजूद राजदूतों से कहा कि उन्हें उम्मीद है कि सभी राजदूत चीन को गहराई से समझेंगे और आपसी सहयोग और दोस्ती के पुल के रूप में काम करेंगे। चीनी राष्ट्रपति ने कहा कि उनकी सरकार सभी राजदूतों को उनकी जिम्मेदारी निभाने में मदद करेगी। बीते तीन सालों में चीन ने कोरोना के खिलाफ लडाई में लंबी दूरी तय की है और इस प्रक्रिया में चीन को कई देशों से मदद भी मिली। उन्होंने कहा कि चीन एक आधुनिक समाजवादी देश के निर्माण की राह पर है और आधुनिकीकरण के लिए राष्ट्रीय कायाकल्प को बढ़ावा दे रहा है। प्रदीप रावत 1990 बैच के विदेश सेवा के अधिकारी हैं। रावत से पहले, विक्रम मिसरी चीन में भारत के राजदूत थे। रावत इससे पहले नीदरलैंड्स में भारत के राजदूत का पद संभाल रहे थे लेकिन मार्च 2022 में उन्हें चीन का राजदूत बनाया गया।

इस्लामिक स्कॉलर तारेक फतेह का निधन: पाकिस्तान में जन्म हुआ, कनाडा में आखिरी सांस ली; खुद को हिंदुस्तानी कहते थे

टोरंटो।
पाकिस्तानी मूल के इस्लामिक स्कॉलर तारेक फतेह का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। 73 साल के फतेह सोशल मीडिया पर काफी पॉपुलर थे। उन्हें अक्सर टीवी डिबेट्स में देखा जाता था। तारेक फतेह जिहाद के सख्त विरोधी थे। उन्होंने हमेशा कहा कि दूसरों की जान लेना जिहाद नहीं है। फतेह हमेशा पाकिस्तान की सरकार और फौज के विरोधी रहे। वो खुद को हिंदुस्तानी कहते थे।

फतेह का जन्म 20 नवंबर 1949 को पाकिस्तान के कराची शहर में हुआ। 1960 और 70 के दौर में वो वामपंथी विचारधारा से प्रेरित रहे। उस दौरान पाकिस्तान में फौजी हुकूमत थी। फतेह को दो बार जेल भी जाना पड़ा। 1977 में जनरल जिया उल हक ने उन पर मुल्क से गद्दारी का आरोप लगाया और इसके साथ ही अखबारों में कॉलम लिखने पर भी रोक लगा दी। इसके बाद 1987 में उन्होंने कनाडा शिफ्ट होने का फैसला किया।

अपना मुल्क छोड़ दिया - वो पॉलिटिकल एक्टिविस्ट होने के साथ ही टीवी होस्ट और लेखक भी थे। उनकी किताब 'चेसिंग ए मिराज: द ट्रैजिक इल्यूजन ऑफ एन इस्लामिक स्टेट' बेस्ट सेलर साबित हुई। इसके अलावा, 'द ज्यू इज नॉट माय एनिमी' भी काफी लोकप्रिय रही। फतेह कहते थे- मैं पंजाब का शेर, हिंदुस्तान का बेटा, कनाडा का प्रेमी, सच्चाई का पैरोकार और नाइंसाफी के खिलाफ लड़ने वाला शख्स हूं। फतेह की बेटी नताशा ने पिता के निधन की जानकारी सोशल मीडिया पर दी। नताशा ने सोशल मीडिया पर भी पिता के उन्हीं शब्दों को दोहराया जो वो अपने बारे में अक्सर कहा करते थे। कहा था- मोदी ने पाकिस्तान को भुखमरी की कगार पर ला दिया तारेक फतेह ने कई मौकों पर भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी का खुलकर समर्थन किया। तारेक ने कहा था- मोदी ने बिना एक गोली चलाए पाकिस्तान को भुखमरी की कगार पर ला दिया। वक्त है जब पाकिस्तान कि सियासतदान मोदी से सीखें।

नताशा ने सोशल मीडिया पर एक मैसेज पोस्ट किया था। इसमें कहा था- रविवार सुस्त रहा। पापा ने बॉलीवुड के पुराने गाने सुने और बताया कि वो भारत माता से कितना प्रेम करते हैं।

मैं तो राजपूत था - तारेक ने कहा था- मैं तो राजपूत परिवार से आता हूं, जिसे 1840 में जबरिया तौर पर मजहब बदलने के लिए मजबूर किया गया। मैं पाकिस्तान में पैदा हुआ हिंदुस्तानी बेटा हूं। मैं सलमान रुश्दी की किताब में मिडनाइट चिल्ड्रन्स के कई बच्चों में से एक हूं। हमें एक शानदार सभ्यता छोड़कर ताउम्र रिफ्यूजी बना दिया गया।

पाकिस्तानियों ने माना- भगवान राम के बेटे का है लाहौर

इस शहर में हजारों साल पुराना लव मंदिर और शिवालय, सर गंगाराम ने बसाया था नया शहर

इस्लामाबाद।
भूख और तंगहाली से जूझते पाकिस्तानियों को भगवान राम और उनके बेटे लव की याद आ रही है। वो लव को अपने शहर का संस्थापक बता रहे हैं। पाकिस्तानियों के अचानक हुए इस हृदय परिवर्तन ने कई लोगों को अचरज में डाल दिया है। पाकिस्तान के सबसे प्रमुख शहरों में से एक लाहौर भगवान राम के बेटे लव की नगरी रही है। इस शहर का प्राचीन इतिहास भारतीय संस्कृति से जुड़ता है। भारत में पहले भी इस तरह की बात कही जाती रही है। लेकिन इस बार खुद पाकिस्तानी मीडिया ने इस सच को स्वीकार किया है।

एक रिपोर्ट में लाहौर शहर के प्राचीन इतिहास की पड़ताल की गई है। इस रिपोर्ट में माना गया है लाहौर को राजकुमार लव ने बसाया था और उन्हीं के नाम पर इस शहर को यह नाम मिला। साथ ही पाकिस्तानी शहर 'कसूर' को भगवान राम के दूसरे बेटे कुश का बसाया हुआ बताया गया है। इसके अलावा भी इस शहर के कई पुराने मंदिरों और ऐतिहासिक इमारतों के बारे में बताया गया है आमतौर पर पाकिस्तान और पाकिस्तानी मीडिया वहां के प्राचीन इतिहास से इनकार करता रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में भी पाकिस्तान में ज्यादा बात नहीं की जाती। वे मुहम्मद बिन कासिम के से पहले के इतिहास को 'अंधेरे का युग' कहते हैं। यही वजह है कि पाकिस्तान अब तक इस सच को स्वीकार करने से बचता रहा है। लेकिन अब आश्चर्यजनक रूप से पाकिस्तानी मीडिया में इसकी चर्चा हो रही है।

लाहौर किले के भीतर है लव मंदिर, किले से काफी पुराना - लाहौर किले के भीतर मौजूद लव मंदिर लाहौर की सबसे पुरानी इमारत है। यह मंदिर किले के बनने से काफी पहले से यहां मौजूद था। मुगल काल में बादशाह अकबर ने इसके चारों और किले का निर्माण करा दिया। जिसके बाद यह मंदिर भी किले का हिस्सा हो गया। लेकिन मंदिर के डिजाइन और मौजूदा शहर की सतह से इसकी उसकी ऊंचाई के आधार पर माना गया है कि यह मंदिर किले की अपेक्षा काफी पुराना है।

7वीं सदी में चीनी यात्री ने भी लाहौर को बताया मंदिरों का शहर - 7वीं सदी में चीनी यात्री युवान चांग भारत की यात्रा पर आया था। इस दौरान वह लाहौर भी गया। उसने लाहौर के बारे में लिखा कि यह शहर सुंदर और बड़े मंदिरों और बागों से भरा हुआ है। इसके अलावा साल 982 में लिखे गए एक दस्तावेज में भी लाहौर के मंदिरों के बारे में जानकारी मिलती है। यह लिखित दस्तावेज आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में देखा जा सकता है।

भीड़भाड़ वाले बाजार में मौजूद है टिब्बी वाला शिवालय - टिब्बी बाजार लाहौर का भीड़भाड़ वाला इलाका है। इसी इलाके के बीचोंबीच एक प्राचीन शिव मंदिर है। इसे टिब्बी वाला शिवालय कहा जाता है। ये शिवालय अरब आक्रमण के पहले से लाहौर में मौजूद है।

लाहौर को बताया 4 हजार साल पुराना शहर - इसी रिपोर्ट में दावा किया गया है कि लाहौर शहर लगभग 4000 हजार साल पुराना है। अरब आक्रमण से पूर्व यहां कई बड़े हिंदू और बौद्ध शासक हुए। मिस्र के एक यात्री के विवरण के आधार पर दावा किया गया है कि पाटलिपुत्र (पटना) और नील नदी (मिस्र) के बीच बसे 'खूबसूरत' शहर लाहौर को ही कहा गया है।

कुतुबुद्दीन ऐबक से लेकर महाराजा रंजीत सिंह से जुड़ा है लाहौरी इतिहास - लव की नगरी लाहौर मध्य और आधुनिक काल में भी ऐतिहासिक महत्व का शहर रहा है। इसी शहर में गुलाम वंश के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक की घोड़े से गिरकर मौत हुई थी। उसकी कब्र इसी शहर में है। यहां दाता गंज बख्श का भी मज़ार मौजूद है। मुगल काल में लाहौर का किला सत्ता का प्रमुख केंद्र था। बाद में जब महाराजा रंजीत सिंह ने पंजाब की सत्ता संभाली तो उन्होंने भी लाहौर के किले को अपना केंद्र बनाया। आधुनिक लाहौर शहर को भी सर गंगाराम नाम के इंजीनियर ने बसाया था। उनके नाम पर दिल्ली में एक प्रमुख अस्पताल भी चलता है।